पार्किन्सन का इलाज हल्दी से

चूहों पर किए गए प्रयोगों से उम्मीद बंधी है कि हल्दी तंत्रिका तंत्र की क्षति को रोकने में सहायक हो सकती है।

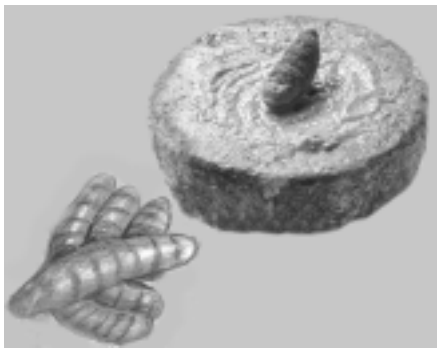

हल्दी में बहुत ही उपयोगी गुण होते हैं जिनके कारण इसका इस्तेमाल आयुर्वेदिक औषधियों के निर्माण में किया जाता है।

हाल के प्रयोगों से पता चला है कि हल्दी में पाए जाने वाले एक पदार्थ कर्क्यूमिन का उपयोग पार्किन्सन बीमारी के उपचार में किया जा सकता है। पार्किन्सन बीमारी मध्य मस्तिष्क में स्थित एक बहुत ही महत्वपूर्ण तंत्रिका कोशिका डोपामिनेर्जिक की मृत्यु के कारण होती है। इस बीमारी में शरीर की आंतरिक क्रियाओं (सोचना, याददाश्त आदि) एवं बाहरी क्रियाओं (सिर व हाथ-पैरों का हिलना आदि) पर व्यक्ति का नियंत्रण नहीं रह पाता है। यह पार्किन्सन की आरंभिक अवस्था होती हैं।

इस बीमारी के उपचार में हल्दी का चमत्कारिक पदार्थ कर्क्यूमिन वरदान साबित हो सकता है। यह बात कुछ प्रयोगों और कम्प्यूटर मॉडल की मदद से पता चली है।

शोधकर्ताओं ने चूहे पर एक प्रयोग के आधार पर उक्त निष्कर्ष दिए हैं। उन्होंने पाया कि ग्लूटाथाएमीन यानी जी.एस.एच. एक ऑक्सीकरण-रोधी है जो मध्य मस्तिष्क में स्थित तंत्रिका कोशिकाओं में पाया जाता है। इसके बढ़ जाने से विषैले मुक्त मूलक माइटोकॉण्ड्रिया को हानि पहुंचाते हैं। ऐसा होने पर तंत्रिका तंत्र पार्किन्सन बीमारी का प्रतिरोध नहीं कर पाता है। गौरतलब है कि यह जी.एस.एच. मस्तिष्क की क्रियाओं को नियंत्रित करता है और इसके बढ़ने से ही पार्किन्सन होता है। यदि हम यह समझ पाएं कि तंत्रिका कोशिका डोपामिनेर्जिक की मृत्यु क्यों होती है तो हम इस प्रक्रिया को धीमा कर सकते हैं या इसके उपचार के तरीके खोज सकते हैं, यह कहना है एम.एम. श्रीनिवास भरत का जो इस पर शोध कर रहे हैं। उनका यह भी कहना है कि यदि हम तंत्रिका तंत्र में जी.एस.एच. द्वारा होने वाली तंत्रिका क्षति को रोक सकें तो हम तंत्रिका तंत्र को नष्ट होने से बचा सकते हैं। इसके लिए उन्होंने चूहे के मस्तिष्क में कर्क्यूमिन प्रविष्ट कराया तो जी.एस.एच. पर विषैले मुक्त मूलकों का प्रभाव नहीं पड़ा। उन्होंने पार्किन्सन रोग और कर्क्यूमिन के असर को समझने के लिए एक कम्प्यूटर मॉडल भी बनाया है। ***(स्रोत विशेष फीचर्स)***